Lecture No (4)

Name of the college - A.P.S.M. college, Barauni, Begusarai
L.N.M.U Darbhanga.

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)

Deptt - A.I.H.&C

Lession / plan - BA Part III A.I.H.&C(H) Paper - V

Name of Topic - (बोधगया)

Date - 26-06-2021

बोधगया :- बोधगया के नाम से प्रसिद्ध हुआ और वृक्ष को बोधिवृक्ष (Botree) पुकारने लगे। उसी वृक्ष के समीप बुद्ध का वज्रासन दीख पड़ता है जहाँ बैठकर तपस्या प्रारम्भ की थी। भरहुत के सदृश उत्तर मौर्यकाल (शुंग युग) में बोधगया में जो वेदिका निर्मित हुई, वह वज्रासन एवं बोधिवृक्ष के चारों ओर थी। किन्तु पूर्णवर्मा नामक मगध नरेश ने वेदिका का विस्तार किया। ह्वेनसांग ने ऐसा ही विवरण दिया है वर्तमान समय में बोधगया की वेदिका वृक्ष वज्रासन तथा चंक्रम पथ को घेरे हुए है अनेक छोटे स्तूप इसकी परिधि के बाहर है। पूर्वी दिशा में तोरण भी दीख पड़ता है। किन्तु वेष्टनी का भाग उत्तर पश्चिम में शेष रह गया है। बोधगया की वेदिका अन्य वेदिकाओं से कुछ भिन्न है। इसे भी हीनयान युग में तैयार किया गया था, अतएव प्रतीकों तथा कथानकों का प्रदर्शन दीख पड़ता है ईसा पूर्व सदी में निर्मित वेदिकाओं की यही विशेषता है कि उनकी कला प्रतीकात्मक है। भरहुत से बोधगया की कला उच्चतर समझी जाती है। इसमें भी तत्कालीन सामाजिक बातों का प्रदर्शन है परन्तु बोधगया के कलाकार खुदाई करते समय आवश्यक तथा अनावश्यक तत्वों में विभेद

P.T.O.

(2)

करते रहे। इस कारण आवश्यक तत्वों के संग्रह से प्रदर्शन अर्थपूर्ण होता था। भरहुत की तरह उनकी कला बोझिल न थी। थोड़ी लीका में आकृति को सुंदर बनाकर संक्षिप्तीकरण पर ध्यान देते थे। बोधगया के प्रदर्शन भार रहित तथा गोलाकार होकर सजीवतापूर्ण है। यही कारण है कि बोधगया को ऊंची सीढ़ी पर रखते है। यहाँ की आकृतियों की ग्रंथियों में गति का संचार होता है। रूपचित्रों में गतिविधि की कल्पना तथा चित्र को आकर्षित करने वाले गुण विद्यमान है। उनके अवलोकन से चित्र की प्रसन्नता होती है और किसी न किसी प्रकार का उपदेश मिलता है। होती है और किसी न किसी प्रकार का उपदेश मिलता है, उनमें गहराई लंबाई, चौड़ाई में तो चारों स्थान खुले है, उनमें गहराई का कार्य भी प्रारंभिक दशा में दीख पड़ता है। सबसे प्रमुख बात यह है कि ब्राह्मण धर्म के प्रभाव से बोधगया की वेदिका अछूती न रह सकी। इसके स्तम्भ पर सूर्य के रथ की आकृति है। इंद्र बुद्ध के दर्शनार्थ उपस्थित है ज्योतिषशास्त्र की बारह राशियों की कल्पित आकृतियाँ उत्कीर्ण है। इससे धार्मिक भावना के समन्वय का परिज्ञान हो जाता है। ऐतिहासिक घटनाओं में जेतवन विहार का प्रदर्शन सुंदर रीति से संपन्न है। वेदिका के गोलाकार फलकों पर ही राशियों के चित्र तथा पुरुष या बोधगया श्रेणी का लिए प्रदर्शित है। इन सभी बातों में बोधगया की वेष्टनी का शेषांश समानता रखता है। बोधगया की वेष्टनी का आलंबन - प्रस्तर चारों तरफ दीख पड़ता है। वर्तमान मंदिर भी वेष्टनी के भीतर खड़ा है। यह किस समय निर्मित हुआ यह वास्तविक रूप से नहीं कहा जा सकता यद्यपि बारहवीं सदी में बर्मा की सरकार द्वारा इसका जीर्णोद्धार हुआ था

बौद्धि वृक्ष की दक्षिण दिशा में स्तूप के अवशेष है जिसे अशोक ने बनाया था।

P.T.O.

ह्वेनसांग के वर्णन से ज्ञात होता है कि पूर्वी दिशा से सेना ने बुद्ध पर आक्रमण किया था। सुजाता द्वारा तपस्वी गौतम को खीर देना निरंजना नदी पार कर वृक्ष के नीचे बैठना तथा सैनिको द्वारा आक्रमण, सभी बोधि वृक्ष के समीप की घटनाएँ है। किन्तु बोधगया का वेष्टनी पर इनका प्रदर्शन नही मिलता। सांची - तोरण की बडेरियों पर यह चित्र उत्कीर्ण है। स्तूप के बाहर वेष्टनी की स्थिति बोधिवृक्ष के महत्व को बतलाती है। पर विजय का ज्ञान - प्राप्त करना बोधगया की प्रमुख घटना थी जिसका प्रदर्शन अज्ञात कारणवश छूट गया है।

बोधगया के मंदिर के समीप चारो तरफ छोटे - छोटे पूजा स्तूप बने है। कुछ चुनार तथा काले पत्थर में खुदे है। एक तरफ ऊँचे टीले पर "अनिमिसलोचन स्तूप", निर्मित है। कहा जाता है कि वही से बुद्ध ने बोधिवृक्ष को देखा था। बोधगया में स्तूप की प्रधानता नही है।

भारती कुमारी
A.I.H.&C
Date -

Scanned with CamScanner